भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-16, अंक-8 गुरुवार, 26 अग.' 93	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी अगस्त, 1993	वार्षिक चन्दा-30.00 प्रति अंक : 3.00

अमृतसेतु

[हम सब के प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव (75वीं जन्म जयंती) का महामंगलकारी वर्ष–'1993' चल रहा है.... हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि रोम-रोम में भगवान प्रकटाये परम पवित्र पुरुष गरजू बनकर हमारे जीवन में आ गये....हमें अपनी गोद दी और उनके संग जीवन जीये !!...कैसे ऋण चुका भी पायेंगे इनका?

पू. काकाजी के निम्नलिखित दो आंशिक पत्रों से ही स्पष्ट होता है कि हमें कैसी भव्य प्राप्ति हुई है....और इनके संबंध में आने के बाद हमें क्या करना है? और इससे भी अधिक–कैसी कल्पना से परे की प्रीति होगी हम सबसे उनकी? कितना अपना माना होगा हमें–जो ऐसा सचोट व स्पष्ट मार्गदर्शन हमारे लिए खुला रख दिया कि आज भी यदि करने लग जायें तो परम सुखी हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख-शांति, आनंद प्राप्त करें.....

आईये, हम सब मिलकर इस रहस्य का मनन चिंतन करके समझने का प्रयास करें। इन वाक्यों को अपने जीवन का आधार बना लें ताकि 'अमृत महोत्सव' तक में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों हमारी सब कसर टाल कर हमारी साधना की पूर्णाहुति करा देवें....यही अंतर की आरजु.....]

❑ .....मुझे तो
पू.बापा ने अनुपम ही पसंदगी में चुना था,
सो,
सर्वांगी विकास में और सर्वोच्च ब्रह्मीस्थिति में
तकलीफें बाधारूप नहीं बनी
और
मूल रहस्यों गौण नहीं हुए–
अक्षरपुरुषोत्तम उपासना
व
जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दे दी.....
जिससे
सभी भूमिकाओं में अखंड शांति और आनंद रहा....

स्वीट्जरलैंड, 15-7-'77

❑ ❑ ❑

❑ **गुरु** बहुत होते हैं,
परन्तु
❑❑ **सद्गुरु** कम।
और
सच्चा सद्गुरु तो शायद ही मिले
और
मिल भी जाये तो–
उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो–
अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।
वह भी रखें तो–
स्वभाव टाल कर टिकना कठिन।
वह भी कर लें तो–
उसकी अनुवृत्ति में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो–
उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और
वह भी हो, पर–
भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों के साथ
दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर
सरलता वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–
पूर्णता ही प्रगटे
और
Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो,
यह **एकता व समता** दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है?
वह
जरा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें
प्रभु को याद करके
उन्हें ही सब करने देना है।

शिकागो, 12-5-'-77

–प.पू. काकाजी महाराज

❑ शब्द द्वारा परमात्मा के स्वरूप के ज्ञान का उपदेश करे वह **गुरु**।
❑❑ सभी में परमात्मा का दर्शन कराये वह **सद्गुरु**।

पहली सितम्बर.....

दिव्य विभूति प.पू. पप्पाजी का प्रागट्यदिन

पहली सितम्बर...समग्र गुणातीत समाज के लिए परम सौभाग्य का दिन.....इसी दिन प्रभु के अखंड धारक गुणातीत स्वरूप प.पू. पप्पाजी मानवरूप में हम सब के लिए धरती पर प्रगट हुए....

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा है–**'कोटि तप करके, कोटि जप करके, कोटि व्रत करके, कोटि दान और कोटि यज्ञ करके भी जिस भगवान और साधु को प्राप्त करना था वे आज हमें मिले हैं।'**

यदि इस बात को हम विचारें, तो आज हमें प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, पू. साहेब, पू. दिनकरभाई–गुणातीत पुरुषों जो मिले हैं वह क्या प्राप्ति हुई है उसका ख्याल पड़ेगा।

यूँ तो प.पू. पप्पाजी बचपन से ही खूब धीर-गम्भीर....स्थिर, बुद्धिशाली, प्रमाणिक, सीधे-सादे और जब से जीव में गुरुहरि योगीजी महाराज की भगवान के स्वरूप होने की प्रतीति हुई उसी दिन से अपने भाव, बुद्धि, मन, हृदय सब की चाबी बापा को सौंप दी...एक बालक बनकर जीये। उनका बाहरी आकार भी अत्यधिक शीतल, शांत, सौम्य व सरल लगता है और भीतर में तो प्रभु प्रकटाये हैं...इसलिए तो उनकी दृष्टिमात्र पड़ते ही जीव प्रभुसन्मुख होता है। उनकी आँखों में देखते ही अन्तर के विचारमात्र विराम को पाते हैं। गुणातीत समाज का छोटे से छोटा मुक्त भी निःसंकोच अपने मन को निष्कपट कर लेता है...अत्यधिक स्वामीसेवकभाव व विनम्रता का सांगोपांग दर्शन....

एक बार 1989 में 'उभराट' में शिविर थी....उस शिविर में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी 'विरोधप्रकृति वाले के साथ मैत्री करो'– प.पू. काकाजी के इसी ब्रह्मसूत्र पर निरन्तर बात करते रहे। सभी ने सभा में बातें सुनी। एक दिन सभा के बाद प.पू. पप्पाजी जहाँ ठहरे थे वहाँ पर रात्रि को पू. गुरुजी यूँ ही बैठने के लिए गए। प.पू. पप्पाजी ने पू. गुरुजी को एकदम विनम्रभाव से कहा कि मुकुंद एक बात पूछूँ? जब से यह शिविर शुरु हुई है तब से प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एक ही बात कर रहे हैं कि 'विरोधप्रकृति वाले के साथ मैत्री करो।' प.पू. काकाजी स्थूलरूप से थे तब की बात अलग थी...पर अब मैं किससे मैत्री करूँ? पू. गुरुजी तो प.पू. पप्पाजी के face की ओर ही देखते रहे। प.पू. पप्पाजी के face पर अत्यधिक sincerity–सहजता, नितरती गरज ही दिखाई पड़ती थी। पू. गुरुजी तो डूब जैसे गए कि हम भी सभा में बातें सुनते हैं, लेकिन प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी मेरे लिए ही–मेरे पर ही बात कर रहे हैं ऐसा तो हमने लिया ही नहीं, जबकि हम में कोई बरकत भी नहीं और प.पू. पप्पाजी स्वयं गुणातीत स्वरूप होते हुए भी...सच ! हम सबके लिए ये गुणातीत स्वरूप गरजु बनकर आदर्श रखने कैसा जीवन जीते हैं?

ऐसा ही एक अन्य प्रसंग निहारें जिससे पता चलता है कि गुणातीत स्वरूपों ने केवल उपदेश ही नहीं दिया, बल्कि खुद ऐसा जीकर बताया है....हम जब ऐसा सुनते हैं कि प्रभु के अल्प सम्बन्ध वालों को माथे का मुकुट मानो.....तो हमें अपने मायिक

तन्त्र के कारण ऐसा ही लगता है कि ये तो कहने को बड़ी-बड़ी बातें है। भला, हरेक के पास ऐसा वर्ता जा सकता है क्या? लेकिन प.पू. पप्पाजी के प्रस्तुत प्रसंग पर सोचेंगे तो हमें जरूर भीतर में प्रतीति होगी कि इन स्वरूपों ने कैसा जीवन जीया है और आज भी हरेक सैकण्ड अपने गुरुहरि के प्रति ही निगाह रखकर, उन्हें ही राजी करने वे कैसे जी रहे हैं....यह प्रसंग स्पष्ट बताता है कि जिन्हें सचमुच करना होता है, उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं....

1991में प.पू. पप्पाजी एक बार पू. गुरुजी का प्रागट्यदिन मनाने दिल्ली पधारे थे.....पू. गुरुजी का प्रागट्यदिन वैसे English date से 13 मार्च को है, पर sunday की छुट्टी होने के कारण 10 मार्च को मनाया.....फिर 13 मार्च प्रागट्यदिन की असली date होने के कारण मंदिर में मंदिर के सेवकों की एक छोटी सभा का आयोजन रखा और प.पू. पप्पाजी दिल्ली में ही थे सो आशीर्वाद देने पधारने को कहा। प.पू. पप्पाजी ने सहज ही कहा कि अभी sunday को तो मनाया.....मुकुंद ! तुम्हारे कितने जन्मदिन? प.पू. पप्पाजी व गुरुजी का रिश्ता बाप-बेटे का भी, दोस्ती व सखाभाव का भी....सो पू. गुरुजी ने मजाक में जवाब दिया पप्पा, मेरे तो बहुत सारे जन्मदिन है....अभी तिथि के मुताबिक का व स्कूल के certificate वाला तो बाकी है। प.पू. पप्पाजी ने सहज पूछा कि स्कूल के certificate के मुताबिक मतलब? पू. गुरुजी ने उत्तर दिया–स्कूल के certificate में 13 जून date लिखी है.....फिर तो मजाक-मजाक में यह बात आई-गई हो गई। सब तो इस बात को फिर भूल जैसे ही गए थे क्योंकि बात एकदम मजाक के tone में हुई थी.....

लेकिन.....खूब आश्चर्य तब हुआ जब 13 जून को पू. गुरुजी के प्रागट्यदिन निमित्त का प.पू. पप्पाजी ने foreign से आशीर्वाद पत्र भेजा.... आशीर्वाद पत्र पढ़ने से भी पता चलता था कि जैसे असली जन्मदिन ही मानकर प.पू. पप्पाजी ने लिखा हो। पू. गुरुजी ने पिछला सारा प्रसंग याद किया तो उन्हें खूब feel हो गया कि ओहो ! मेरे मजाक के कारण प.पू. पप्पाजी को इतना परिश्रम करना पड़ा? फिर जब प.पू. पप्पाजी वापिस India आए और पहली बार पू. गुरुजी को मिले तो पू. गुरुजी ने प.पू. पप्पाजी को कहा कि–पप्पा ! मैंने तो आपको 13 जून के birthday के बारे में यूँ ही मजाक करी थी और आपने.....! प.पू. पप्पाजी एकदम बोले-**मैं तो योगी के सम्बन्ध वालों की हरेक बात बात चाहे वह मजाक भी हो दिव्य और सत्य ही मानता हूँ....मेरी तो यही जीवन प्रणाली है।** पू. गुरुजी तो एकदम शून्यमनस्क, हतप्रभ होकर प.पू. पप्पाजी की ओर देखते रहे....

दिमाग सचमुच शून्य को जाता है कि आज भी अपने गुरुहरि के संबंध वालों के प्रति प.पू. पप्पाजी की कैसी दृष्टि....हम तो गुणातीत स्वरूपों की श्रेयस बातों को भी जीवन में उतारने को तैयार नहीं होते और वे हमारे मजाक को भी सत्य मानकर चलते हैं। करोड़ों वंदन हैं इनकी गुरुभक्ति को.....

सच ! इन गुणातीत स्वरूपों का जीवन निहारने पर ऐसा लगता है कि कैसा स्वाभाविक व हमारे लिए आदर्श है जीवन उनका !.....तो पहली सितम्बर के महामंगलकारी दिन पर यही प्रार्थना कि हे पप्पाजी ! सर्वप्रथम तो आप अच्छे स्वास्थ्य से खूब दीर्घायु तक अपने दर्शन, सेवा, समागम का सुख देते रहना और हमें गुणातीतभाव में ले जाने इतनी उम्र होते हुए भी आप दिन-रात जो अविरत

परिश्रम कर रहे हैं....आपकी जो हम से अपेक्षा है कि अपने मन, बुद्धि, चित्त की भूमिकाओं व अपनी पसन्द का प्लेटफार्म छोड़कर भगवान की मूर्ति सिद्ध करके अखंड चिदाकाश में ही विहार करें...आपकी इस चाहना को जल्दी से जल्दी साकार करें.....ऐसी करुणा बरसाना !

❋❋❋

स्वामी की बातें

301. हमें तो जीव को भगवान के बिना और कहीं पर जोड़ना नहीं है और तुम्हें प्रवृत्ति में से छुड़वाकर सुख से भजन कराऊँगा। हरिशंकरभाई ने कहा कि आप तो अंतर्यामी हो, सो आपके पास प्रार्थना तो करनी रहती नहीं। तब उत्तर दिया कि अंतर्यामी के पास भी जो पूछना हो वह पूछना चाहिए और कहा कि यहाँ भी भगवान के धाम जैसा ही सुख आप मनाना। तुम्हारा पूर्व का संस्कार बलवान है, सो भजन किया करना। वड़ताल में सभी मेरे में खींचे गए व कईओं ने धोती ओढ़ाई और मैं तो महाराज की मूर्ति को देखता रहा।

प्र–5,36

302. ये जीव सभी अच्छे हैं लेकिन अखंड चिंतन नहीं होता। इसका कारण यह है कि अभ्यास नहीं किया–आदत नहीं डाली। अभ्यास करने से होगा।

प्र–5,37

303. अंतर्यामी के पास मन की चोरी रखे, वह मूर्ख कहलाए। सत्पुरुष का सेवन करने का अर्थ बताया कि उसके हाथ जोड़ना और अनुवृत्ति पालनी व महिमा समझनी; तो कोई कसर नहीं रहेगी।

प्र–5,38

304. गोंडल में हरिशंकरभाई के प्रश्न का उत्तर किया कि तुम्हें गोपाळानंदस्वामी, कृपानंदस्वामी तथा फिलहाल जो बड़े साधु हैं, उनके साथ लगाव है, सो भजन करा करना, प्रश्न पूछने की जरूरत नहीं।

प्र–5,39

305. सभी अच्छे गुण अभ्यास से तथा संग से आते हैं। परन्तु, भगवान की व साधु की निष्ठा–वह तो पूर्व संस्कार से और सत्पुरुष के अनुग्रह से होती है। जितना सत्पुरुष के समागम में रहा जाए उतना उसका संस्कार और अनुग्रह समझना और जिसने जितनी निष्ठा कराई–फैलाई उतना उसका बड़प्पन समझना।

प्र–5,40

306. पूर्व के संस्कार हों, लेकिन घटिया संग मिले तो संस्कार टल जाए और सौ जन्म लेने पर अच्छा होने वाला हो उसे बढ़िया संग मिल जाए तो तुरन्त अच्छा हो जाए।

प्र–5,41

307. सत्पुरुष ने हरेक प्रकार से सुख दिया हो, पहले भगवान ने दिया हो और बहुत महिमा समझ में आई हो, फिर भी इधर-उधर कहते नहीं फिरना और किसी को कहना भी, तो सोलह आने में से एक आना कहना।

प्र–5,42

308. शुकजी ने परीक्षित को कहा कि–मैं राजा हूँ व मुझे ब्राह्मण से श्राप मिला है और मुझे सांप का डंक लगेगा–ऐसी जो तेरी पशुबुद्धि है उसका त्याग करके गर्भ में जिसने तेरी रक्षा करी है उस भगवान को याद कर। सारी भागवत का निचोड़ इतनी बात में है।

प्र–5,43

309. भगवान का जिसे एक बार दर्शन होता है उसके पुण्य का पार नहीं। भगवान के सिवा दूसरी बात सुननी नहीं व भगवान का जोग अत्यंत भारी हुआ है। भगवान की मूर्ति में सारे जीव खिंचे जाते हैं। ज्ञानी को प्रीति रहती है व अज्ञानी की छूट जाती है।

प्र–5,44

310. यह लोक जूतों में जैसे गोबर चिपक गया हो ऐसा है। कंकड़ों वाली जमीन पर चलने लगे है, सो थोड़े समय में घिसकर निकल जाएगा।

प्र–5,45

❋ ❋ ❋

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	27.8.93	शुक्रवार	एकादशी, व्रत
2.	दि.	1.9.93	बुधवार	प्र.ब्र.स्व.प.पू. पप्पाजी महाराज की जयंती पूर्णिमा
3.	दि.	12.9.93	रविवार	एकादशी, व्रत
4	दि.	19.9.93	रविवार	गणेश चतुर्थी

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at R.P. Printers, Shahdara, Delhi-110 032